प्रकरण २ राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियाँ (बाह्य)

संलग्न मानचित्र का निरीक्षण कीजिए ।

भारत के पड़ोसी देश कौन–से हैं इसका अध्ययन करें । उनके साथ भारत के संबंध, पूर्व इतिहास और आज भारत के सामने आने वाली चुनौतियों का हमें विचार अवश्य करना चाहिए । भारत के पश्चिम में पाकिस्तान और उत्तर दिशा में चीन ये पड़ोसी राष्ट्र हैं । भारत की सीमा उत्तर की ओर अफगानिस्तान से भी जुड़ी है । अफगानिस्तान से जुड़े हुए इस भारतीय सीमा प्रदेश को 'वाकन कोरिडोर' कहा जाता है ।

इसके अतिरिक्त भारत के उत्तर दिशा में नेपाल, भूटान देश हैं और पूर्व दिशा में बांग्लादेश तथा म्यानमार प्रदेश हैं । दक्षिण में हिंद महासागरी क्षेत्र में श्रीलंका है ।

भारत तथा पड़ोस के देश

❍ पाकिस्तान :

१९४७ से भारत और पाकिस्तान में अनेक युद्ध हुए हैं। पाकिस्तान के साथ १९४७-४८, १९६५ और १९७१ इन प्रमुख युद्धों का समावेश है तथा इनमें से पहले दो युद्ध प्रमुख रूप से कश्मीर समस्या पर हुए हैं। १९७१ के भारत पाकिस्तान युद्ध के रूप में बांग्लादेश की स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में निर्मिति हुई। इसके पहले पूर्व पाकिस्तान रूप में वह भारत के पूर्व दिशा में स्थित पाकिस्तान का प्रदेश था। १९९९ में भारत को फिर से कारगिल प्रदेश में युद्ध करना पड़ा। पाकिस्तान के साथ अब तक के युद्ध पारंपारिक स्वरूप में मर्यादित थे। भविष्यकालीन युद्ध शायद अण्वस्त्रों के साथ व्यापक स्वरूप में हो सकते हैं अर्थात पाकिस्तान के साथ होने वाले युद्ध का स्वरूप बदल गया है।

यह एक चुनौती है, पाकिस्तान ने कई आतंकवादी गुटों को आश्रय दिया है। भारत पर इन आतंकवादी गुटों का हमला होता रहता है।

❍ चीन :

भारत के उत्तर में चीन यह एक महत्त्वपूर्ण (राष्ट्र) सत्ता है। अंतरराष्ट्रीय सीमाविवाद तथा तिब्बत का स्थान यह भारत-चीन विवाद का मूल कारण है। अक्साई चीन और अरुणाचल प्रदेश (पूर्व नाम, नेफा) की उत्तर सीमा की निश्चिति के संबंध में दो विवाद क्षेत्र इन दोनों देशों के दरमियान हैं। अरुणाचल प्रदेश 'नेफा' नाम से पहचाना जाता है। उत्तर के अक्साई चीन लद्दाख के इस भारतीय प्रदेश पर चीन का अवैध कब्जा है। अरुणाचल प्रदेश तथा तिब्बत के बीच की सीमा 'मैकमोहन रेखा' नाम से जानी जाती है। शिमला में १९१४ में भारत, चीन तथा तिब्बत प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हेनरी मैकमोहन ब्रिटिश अधिकारी ने भारत-चीन के बीच की अंतरराष्ट्रीय सीमा निश्चित की थी। १९६२ के भारत-चीन युद्ध का मूल कारण यह सीमाविवाद ही था।

पारंपरिक दृष्टि से तिब्बत यह स्वंतत्र प्रदेश है। बौद्ध संस्कृति तिब्बत की विशेषता है। १९५० से चीन ने तिब्बत पर अपना अधिकार प्रस्थापित किया है और वहाँ की बौद्ध संस्कृति नष्ट करने का प्रयास कर रहा है। तिब्बत की जनता पर चल रहे अत्याचार के कारण तिब्बत के प्रसिद्ध धार्मिक नेता दलाईलामा ने १९५८ से भारत में आश्रय लिया है।

❍ बांग्लादेश :

१९७१ में भारत के पश्चिम में पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्व में पूर्वी पाकिस्तान ऐसे दो पाकिस्तानी प्रदेश थे। पूर्वी पाकिस्तान में पश्चिम पाकिस्तान द्वारा काफी शोषण तथा मानवीय अधिकारों का उल्लंघन किया जा रहा था। इसी के कारण शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में पूर्वी पाकिस्तानी लोगों ने पश्चिमी पाकिस्तान की अत्याचारी सैनिक सत्ता के खिलाफ विद्रोह किया। पश्चिमी पाकिस्तान के शोषण से मुक्ति पाने के लिए यह विद्रोह किया गया था। इस लड़ाई के

कारण लाखों पूर्व पाकिस्तानी लोग भारत में निर्वासित बनकर आश्रय के लिए आए । इस कारण भारत की अंतर्गत व्यवस्था पर बड़ा तनाव उत्पन्न हुआ इसलिए भारत ने पूर्वी-पाकिस्तान के प्रयत्नों को सहयोग दिया । इससे से ही १९७१ के युद्‌ध का प्रारंभ हुआ और बांग्लादेश की स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में निर्मिति हो गई ।

१९७१ से भारत तथा बांग्लादेश इन दोनों देशों के पारस्परिक सहसंबंध अच्छे रहे हैं । आगे चलकर गंगा नदी के फरक्का बाँध को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ । जो 'फरक्का विवाद' नाम से आज भी प्रसिद्‌ध है । बांग्लादेश की भूमिका के कारण बांग्लादेश से बहने वाली गंगा नदी का पानी रोका गया था । १९७८ में यह विवाद 'फरक्का समझौते' पर दोनों देशों के हस्ताक्षर के साथ समाप्त हुआ ।

❍ श्रीलंका

श्रीलंका के साथ भारत के मैत्रीपूर्ण संबंध हैं । तमिल अल्पसंख्यक समस्या के कारण श्रीलंका के उत्तर की प्रदेश में आंतरिक अस्थिरता थी । तमिल अल्पसंख्यक राजकीय स्वतंत्रता की माँग कर रहे थे । इस स्वतंत्रता की माँग का परिवर्तन बाद में सैनिक कार्यवाही के रूप में हुआ । १९८७ में तमिल समस्या के निराकरण के लिए भारत-श्रीलंका के बीच समझौता हुआ और उसके बाद भारत ने श्रीलंका सरकार को सहयोग के बारे में विश्वास दिलाया । इस समस्या के कारण निर्माण हुई परिस्थिति को नियंत्रण में लाकर सुरक्षात्मक स्थिति निर्माण करने के लिए भारत ने शांतिसेना भेजकर श्रीलंका का सहयोग किया । भारत के उपर्युक्त पड़ोसी देशों के साथ ही हिंद महासागर के महत्त्व को राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से ध्यान में रखना जरूरी है ।

समुद्री क्षेत्र

❍ हिंद महासागर :

भारत को लगभग ७००० किमी का समुद्री किनारा प्राप्त हुआ है । वैश्विक व्यापार की दृष्टि से हिंद महासागर क्षेत्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । इस व्यापार का मुख्य मार्ग स्वेज नहर से मलक्का जल डमरूमध्य तक है । इस मार्ग में भारत का मध्यवर्ती स्थान है । अंदमान-निकोबार द्‌वीप समूह को इसी कारण महत्त्व प्राप्त हुआ है ।

व्यापार के लिए डच, फ्रेंच, पुर्तगाली तथा ब्रिटिश समुद्री मार्ग से भारत में आए और उन्होंने अपने उपनिवेश स्थापित किए। हिंद महासागर में अमेरिका, रूस, चीन तथा अन्य देशों का प्रभाव बढ़ रहा है । यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधन की दृष्टि से संपन्न हैं । इसी कारण हिंद महासागर की सुरक्षा भारत के सामने एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है ।

हिंद महासागर का मानचित्र

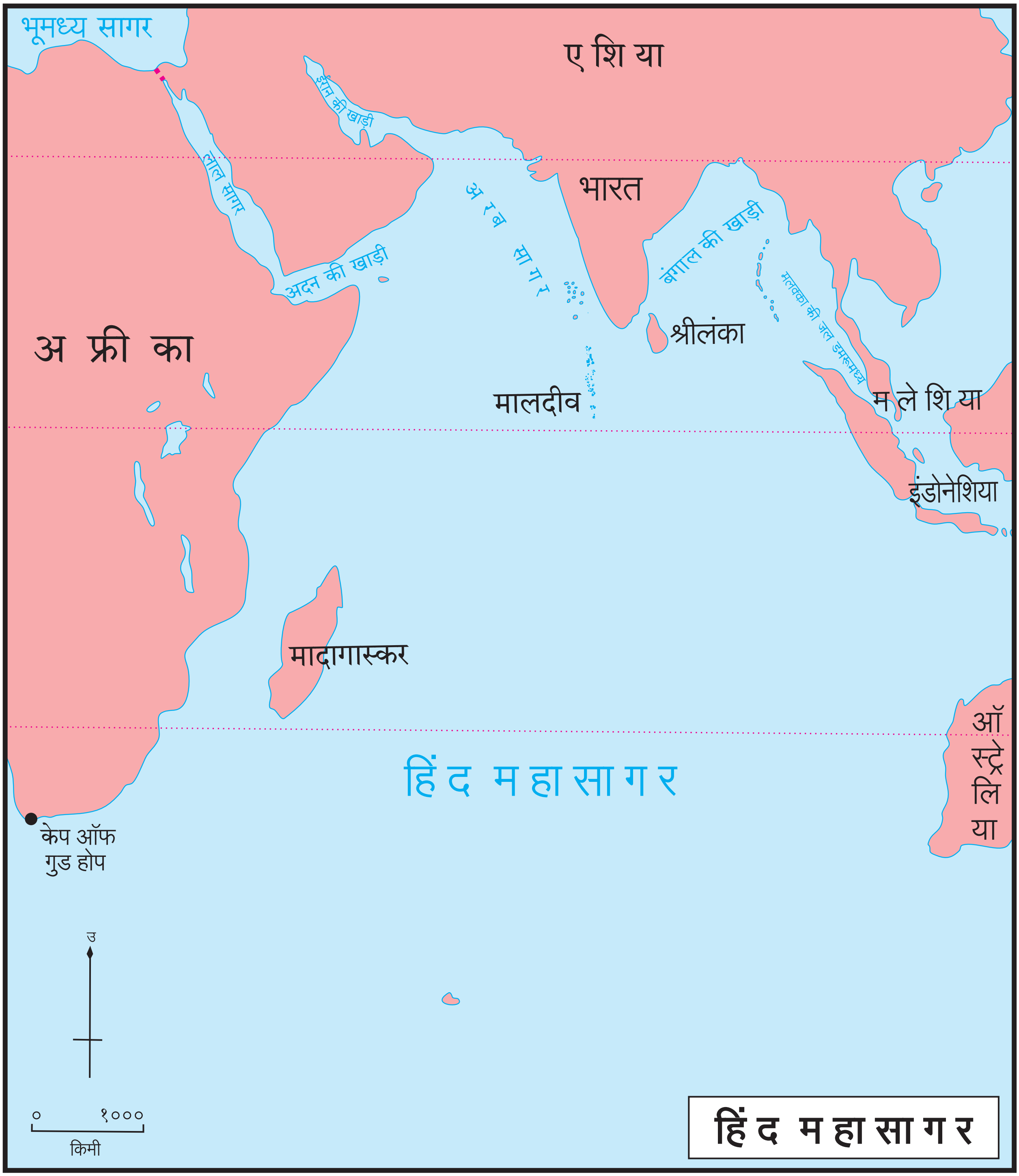

उपक्रम

भारत तथा पड़ोसी देशों के संदर्भ में समाचार पत्रों में आने वाले समाचार, चित्रों का संग्रह कीजिए और यहाँ चिपकाइए ।

भारत तथा पड़ोसी देशों के संदर्भ में समाचार पत्रों में आने वाले समाचार, चित्रों का संग्रह कीजिए और यहाँ चिपकाइए।

JATMTQ